भारत की विदेश नीति के निर्धारक तत्व (Determinants of India's Foreign Policy)

किसी भी देश की विदेश नीति का निर्धारण अनेक तत्वों से होता है। इसके पीछे मूल विचार यह होता है कि सरकारें तो बदलती रहती हैं, लेकिन विदेश नीति पहले जैसी ही रहती है। यद्यपि व्यवहार में तो कुछ अन्तर अवश्य हो सकता है, परन्तु सिद्धान्त तौर पर विदेश नीति के लक्ष्य व सिद्धान्त पहले जैसे ही रहते हैं। उदाहरण के रूप में हम भारत की विदेश नीति को ले सकते हैं। भारत में नेहरु युग से वर्तमान वाजपेयी युग तक विदेश नीति के अधिकार सिद्धान्त वही हैं जो नेहरु जी ने दिए थे। इसका प्रमुख कारण यह है कि विदेश नीति का निर्धारण कुछ स्थायी तत्वों से होता है जिसके कारण विदेश नीति की गतिशीलता पर अधिक प्रभाव नहीं पड़ता। फैडल फोर्ड और लिंकन का कहना है-"मूल रूप से विदेश नीति की जड़ें ऐतिहासिक प ष्ठभूमि, राजनीतिक संस्थाओं, परम्पराओं, आर्थिक आवश्यकताओं, शक्ति के तत्वों, अभिलाषाओं, भौगोलिक परिस्थितियों तथा राष्ट्र के मूल्यों में पाई जाती हैं" ब्रेशर भी विदेश नीति के निर्धारिक तत्वों में भूगोल, अन्तर्राष्ट्रीय परिवेश, व्यक्तित्व, आर्थिक और सैनिक स्थिति तथा जनमत को शामिल करता है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। भारत की विदेश नीति का निर्धारण भी इन्हीं तत्वों के आधार पर होता है। ये तत्व निम्नलिखित हैं :-

(1) **भूगोल** (Geography) :- किसी भी देश की भौगोलिक स्थिति उस देश की विदेश नीति का निर्धारण करती है। जो देश भौगोलिक द ष्टि से सुरक्षित होता है, वह स्वतन्त्र विदेश नीति का निर्माण कर सकता है। भारत की भौगोलिक स्थिति ने भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित किया है। देश के विशाल आकार, उसकी जलवायु, उसकी अवस्थिति (Location) और भू-आकृति (Topography) ने भारत की विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा देश भारत उत्तर में हिमालय तथा बाकी तीनों तरफ समुद्र से घिरा हुआ है। जहां यह स्थिति भारत को सुरक्षित राष्ट्र घोषित करती है, वहीं यह सामरिक द ष्टि से भारत के लिए चिन्ता का कारण भी है। भारत को हिमालय क्षेत्र से घुसपैठ रोकने के लिए तथा अपनी समुद्री सीमाओं की रक्षा करने के लिए भारी सैनिक व्यय करना पड़ता है। समुद्री मार्ग भारत के व्यापार के लिए जितने आवश्यक है, उनकी सुरक्षा के लिए उतना ही भारी व्यय भारत को करना पड़ता है। भारत को भौगोलिक स्थिति पूर्व और पश्चिम को जोड़ती है। हिन्द महासागर के क्षेत्र में बढ़ती अमेरिका, रूस व ब्रिटेन की गतिविधियों से उसका चिन्तित होना स्वाभाविक ही है। इसलिए वह संयुक्त राष्ट्र संघ मे हिन्द महासागर को शान्ति का क्षेत्र (Zone of Peace) घोषित करवाने का प्रयास करता रहता है। पाकिस्तान की तरफ से बढ़ रही आतंकवादी गतिविधियां भी उसकी चिन्ता का कारण है।

इसलिए वह पाकिस्तान के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों की स्थापना को प्रार्थमिकता देता है। विदेश नीति के विश्लेषकों का मानना है कि भारत की भौगोलिक स्थिति की प्रमुख मांग यह है कि उसे अपने पड़ोसी देशों से मधुर सम्बन्ध बनाए रखने के प्रयास करते रहने चाहिए, क्योंकि भारत की स्थल सीमाएं पाकिस्तान, चीन, नेपाल, बंगला देश और म्यांमार से मिलती हैं। इसके साथ-साथ उसके ईरान, ईराक, अफगानिस्तान, हिन्दी चीन आदि देशों से भी मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध हैं। हिन्द महासागर में भारत की सुरक्षा भी एक प्रमुख मुद्दा है। दक्षिण-पूर्व एशिया का विचार भी भारत की विदेश नीति को विशिष्टता प्रदान करता है। भारत द्वारा ASEAN तथा SAARC संगठनों को मजबूत बनाने के पीछे यही विचार है कि दक्षिण एशिया में भारत के हित सुरक्षित हों। अपने हितों को देखते हुए भारत ने एक शक्तिशाली नौसैनिक बेड़ा रखा हुआ है ताकि उसके समुद्री मार्गों की रक्षा हो सके। वह हिमालय क्षेत्र की रक्षा के लिए एक शक्तिशाली वायु सेना तथा स्थलीय क्षेत्रों की रक्षा के लिए स्थल बेड़ा भी रखता है। लेकिन इससे भारत के हित पूर्ण रूप से सुरक्षित नहीं रह सकते। इसलिए भारत के लिए यह जरूरी है कि वह अपने विवादों को शान्तिपूर्ण सम्बन्धों द्वारा हल तलाश करे। इसी कारण आज भारत की विदेश नीति पड़ोसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्धों को प्राथमिकता देती है। इसलिए वर्तमान मनमोहन सिंह सरकार भी पाकिस्तान के साथ मधुर सम्बन्धों को प्राथमिकता दे रही है। इसके साथ-साथ भारत उप-महाद्वीप के समीपवर्ती देशों से भी मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास करता रहता है। लेकिन पाकिस्तान के साथ कटुतापूर्ण सम्बन्ध आज भी भारत की विदेश नीति के कुशल संचालन में सबसे बड़ी बाधा है। चीन, बंगलादेश, श्रीलंका के साथ भी कुछ मतभेद हमारी विदेश नीति को गम्भीर चुनौती देते हैं।

(2) **आर्थिक व सैनिक तत्व** (Economic and Military Factors) :- अपनी स्वतन्त्रता के बाद भारत के सामने प्रमुख समस्या राष्ट्रीय सुरक्षा व आर्थिक विकास की थी। आर्थिक विकास के लिए यह जरूरी होता है कि उस देश के साथ प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन व उनके दोहन की क्षमता हो। भारत के पास प्राकृतिक साधन तो प्रचूर मात्रा में थे, लेकिन उनका दोहन करने के लिए पूंजी व तकनीक का अभाव था। इसलिए भारत ने अमेरिका तथा ब्रिटेन जैसे देशों से सम्बन्ध स्थापित किए। साथ में उसने रूस को भी नाराज नहीं किया। इसलिए उसने गुट निरपेक्षता का पालन करते हुए विश्व की दोनों महाशक्तियों से सम्बन्ध जोड़े रखे। इससे उसकी विदेश नीति की स्वतन्त्रता भी बरकरार रही। यद्यपि बार-बार भारत पर अमेरिका व रूस द्वारा दबाव बनाया गया कि वह उनके साथ शामिल हो जाए, लेकिन भारत ने ऐसा न करके अपनी प्रभुसत्ता व प्रादेशिक अखण्डता की रक्षा की, परन्तु आर्थिक निर्भरता ने भारत को बौद्धिक सम्पदा कानून व बहुराष्ट्रीय निगमों की अनुचित शर्तों को मानना पड़ा है। आज भारत की अर्थव्यवस्था आर्थिक उदारीकरण के दौर में है और वह WTO के नियन्त्रण में है। यद्यपि भारत अपने निकटवर्ती देशों के साथ मिलकर दक्षिण एशिया के देशों में पारस्परिक अन्तनिर्भरता का विकास करना चाहता है। इसके लिए वह ASEAN तथा SAARC में SAFTA का विचार रखकर दक्षिण एशिया को मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाना चाहता है, लेकिन फिर भी भारत WTO के अमीर देशों पर निर्भरता कम नहीं हुई है। इसलिए भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह विकास का राजनय अपनाए। लेकिन उसे ऐसा करते समय अपनी सम्प्रभुता व प्रादेशिक अखण्डता का ध्यान रखना चाहिएं यद्यपि भारत आज नई अन्तर्राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था (NIEO) की मांग भी करता है, लेकिन वह WTO के पाश से मुक्त नहीं है। इसलिए वह विश्व के विकसित देशों के साथ मधुर व सौहार्दपूर्ण आर्थिक सम्बन्धों को प्राथमिकता देता है।

भारत के आर्थिक विकास को चुनौती देने वाला एक प्रमुख तत्व सैनिक तत्व है। भारत को प्रतिवर्ष अपने बजट का एक बहुत बड़ा हिस्सा सेना पर खर्च करना पड़ता है। इससे भारत का आर्थिक विकास प्रभावित होता है। भारत ने रूस, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों से कई सामरिक समझौते भी किए हैं। भारत द्वारा अस्त्र खरीदने का कार्यक्रम उसकी अर्थव्यवस्था को गम्भीर खतरा पैदा कर सकता है। इसलिए भारत के लिए यह आवश्यक है कि वह युद्ध की सम्भावनाओं को रोके और

शान्ति के प्रयास करे। उसे विश्व के अन्य देशों से आर्थिक सहायता लेते समय भी सावधानी से कार्य करना चाहिए। इसलिए भारत को अपनी गुटनिरपेक्षता की नीति का भी सोच समझकर ही क्रियान्वयन करना चाहिए ताकि किसी आर्थिक शक्ति की नाराजगी मोल न लेनी पड़े। भारत अपनी अर्थव्यवस्था में सुधारों की दिशा में कार्यरत है, लेकिन उसे आधुनिक अनुसार अपने व्यापारिक सम्बन्ध अधिक से अधिक देशों के साथ कायम करने चाहिए आर साथ में ही उसे स्वयं को सामरिक द ष्टि से सुरक्षित भी बनाना चाहिए, यही भारत की विदेश नीति का ध्येय है।

(3) **इतिहास व परम्परा** (History and Tradition) :- भारत की विदेश नीति की जड़ें उसके इतिहास व परम्पराओं में हैं। भारत का अहिंसावादी चिन्तन अर्थात् महात्मा बुद्ध और गांधी का आदर्शवादी चिन्तन भारत की विदेश नीति में आदर्शवादी तत्वों का समावेश करता है। नेहरु जी द्वारा प्रतिपादित पंचशील और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का सिद्धान्त भारत की ऐतिहासिक-सांस्कृतिक धरोहर है। भारतीय मनीषियों ने वर्षों तक जिस अहिंसावादी परम्परा का विकास किया, वही आज भारतीय विदेश नीति का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन भी कुछ ऐसी परम्पराएं छोड़ गया जो आज भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखती है। साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद व रंगभेद की नीति का विरोध आज भी हमारी विदेश नीति का प्रमुख सिद्धान्त है, भारत ने हमेशा ही साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद तथा रंगभेद की नीति का विरोध किया है। इतिहास व परम्परा के प्रभाव के बारे में पॉमर व पर्किन्स ने लिखा है-भारतीय विदेश नीति का निर्धारण आज भी उसके इतिहास व परम्पराओं द्वारा ही किया जाता है। इसी कारण भारत विश्व शान्ति के विचार का प्रबल समर्थक माना जाता है। भारत पर पाकिस्तान द्वारा आक्रमण किए गए लेकिन भारत ने पाकिस्तान के प्रति शान्तिपूर्ण नीति को ही अपनाकर उसके जीते हुए क्षेत्र लौटाए। ऐसा ही उसने चीन के साथ अपने सम्बन्ध सुधारने के लिए किया। भारत आज भी अपने पड़ोसी देशों के साथ शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व की नीति अपनाता है।

(4) **वैचारिक तत्व** (Ideological Factors) :- किसी भी देश की विदेश नीति को निर्धारण करने में विचारधारा का भी महत्वपूर्ण हाथ होता है। भारत भी इसका अपवाद नहीं है। भारत की विदेश नीति गांधीवादी विचारधारा पर आधारित रही है। भारत ने लोकतन्त्रीय समाजवाद को ही अपनी शासन व्यवस्था का आधार बनाया है। इसलिए भारत की विदेश नीति सोवियत संघ और अमेरिका दोनों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की रही है। नेहरु जी ने प्रजातन्त्र व साम्यवाद दोनों विचारधाराओं को अपनी विदेश नीति में जगह दी। अर्थात् नेहरु जी की विदेश नीति में उदारवाद और मार्क्सवाद दोनों का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। इसके साथ-साथ नेहरु जी ने अहिंसावाद की परम्परा को गांधी जी से ग्रहण करते हुए अपना पंचशील और शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त भी पेश किया जो आज भी भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(5) **चमत्कारिक व्यक्तित्व** (Charisma) :- भारत की विदेश नीति के निर्धारण में नेहरु, इन्दिरा गांधी, राजीव गांधी व वाजपेयी जी के चमत्कारिक व्यक्तित्व का भी काफी प्रभाव रहा है। नेहरु जी का प्रभाव इस बात में देखा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति के अधिकतर सिद्धान्त उन्हीं की देन हैं। नेहरु का व्यक्तित्व इतना आकर्षक था कि वे किसी भी व्यक्ति को अपने वश में कर लेते थे। वे कांग्रेस पार्टी के विदेश विभाग में निरन्तर अध्यक्ष रहें। उनका व्यक्तित्व देश प्रेम और अन्तर्राष्ट्रीयता का मिलन था, उसमें समाजवाद और उदारवाद लोकतन्त्र का संगम था तथा गांधी जी के आदर्शवाद और यथार्थवाद का सुन्दर समन्वय था। नेहरु जी ने राष्ट्रमण्डल देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित किये, विदेश विभाग की स्थापना की और विदेश नीति का निर्माण किया। उन्होंने एशिया व अफ्रीका के पराधीन देशों की स्वतन्त्रता का समर्थन भी किया। उनके द्वारा